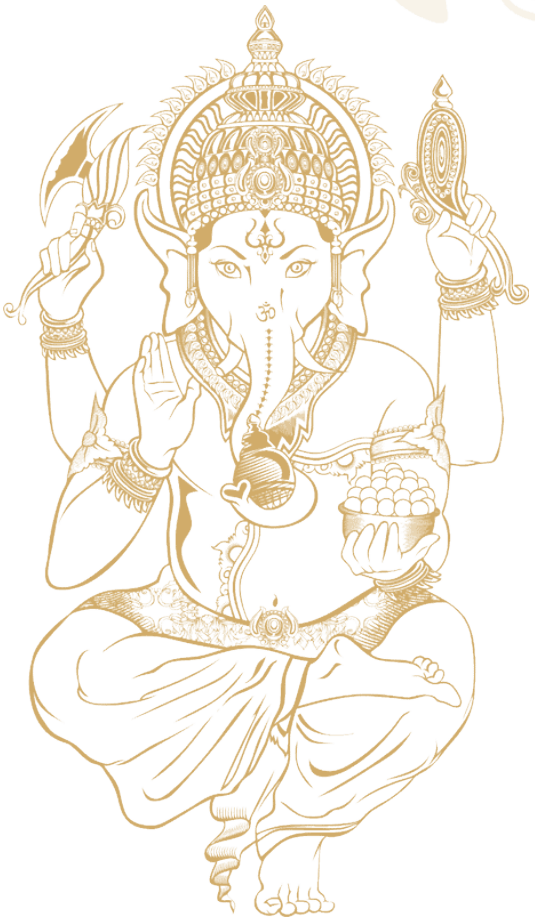

Pradnya Ghanshyam Bhavsar

11 Jul 1981

05:38 AM

Mumbai

Model: Baby-Horoscope

Order No: 119881201

तिथि 11/07/1981 **समय** 05:38:00 **वार** शनिवार **स्थान** Mumbai **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:35:42
अक्षांश 18:58:00 उत्तर **रेखांश** 72:50:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:38:40 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	00:14:38 घं
वेलान्तर	00:05:24 घं
सूर्योदय	06:07:54 घं
सूर्यास्त	19:19:52 घं
चैत्रादि संवत	2038
शक संवत	1903
मास	आषाढ़
पक्ष	शुक्ल
तिथि	10
नक्षत्र	स्वाति
योग	साध्य
करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	महिष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रो-रोहिणी
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	मंगल
चौघड़िया	लाभ

विंशोत्तरी

राहु 5वर्ष 6मा 20दि
बुध
30/01/2022
30/01/2039

बुध	28/06/2024
केतु	25/06/2025
शुक्र	25/04/2028
सूर्य	01/03/2029
चन्द्र	01/08/2030
मंगल	29/07/2031
राहु	14/02/2034
गुरु	22/05/2036
शनि	30/01/2039

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 7मा 12दि
भद्रिका
21/02/2025
21/02/2030

भद्रिका	02/11/2025
उल्का	02/09/2026
सिद्धा	23/08/2027
संकटा	02/10/2028
मंगला	22/11/2028
पिंगला	03/03/2029
धान्या	02/08/2029
भ्रामरी	21/02/2030

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			17:28:18	मिथु	आर्द्रा	4	राहु	सूर्य	---	0:00			
सूर्य			25:01:03	मिथु	पुनर्वसु	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.34	आत्मा	पितृ	सम्पत
चंद्र			15:53:03	तुला	स्वाति	3	राहु	शुक्र	सम राशि	1.27	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल			01:24:06	मिथु	मृगशिरा	3	मंगल	बुध	शत्रु राशि	1.52	कलत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध			05:04:33	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	सूर्य	स्वराशि	1.11	ज्ञाति	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			09:36:28	कन्या	उ०फाल्गुनी	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि	1.13	पुत्र	धन	वध
शुक्र			19:58:04	कर्क	आश्लेषा	1	बुध	शुक्र	शत्रु राशि	1.42	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि			10:27:44	कन्या	हस्त	1	चंद्र	चंद्र	मित्र राशि	1.34	मातृ	आयु	मित्र
राहु	व		08:11:07	कर्क	पुष्य	2	शनि	शुक्र	शत्रु राशि		---	ज्ञान	विपत
केतु	व		08:11:07	मक	उत्तराषाढ़ा	4	सूर्य	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	वध

लग्न-चलित

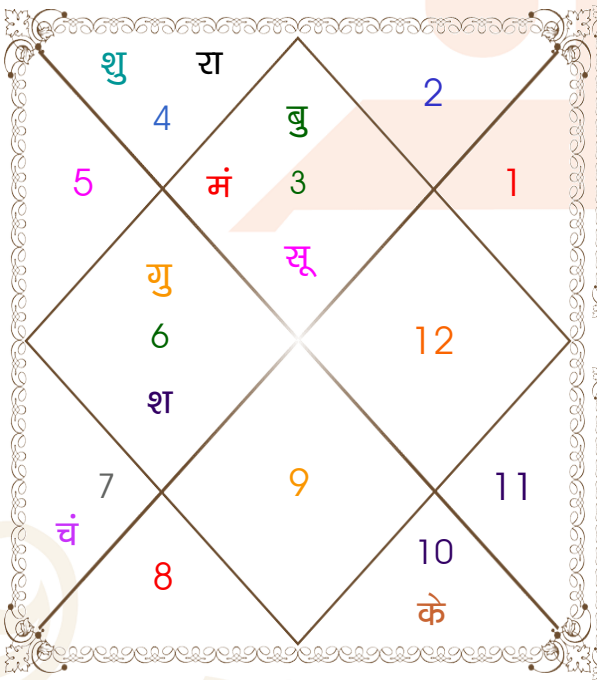

चन्द्र कुंडली

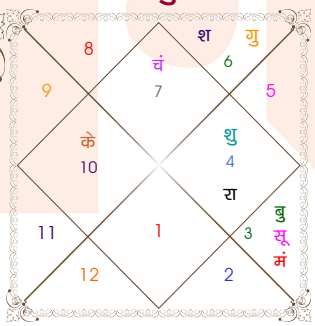

नवमांश कुंडली

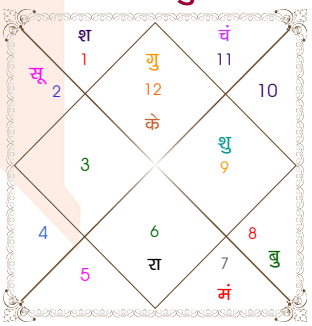

सर्वाष्टकवर्ग

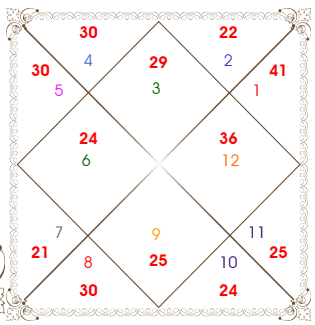

दशमांश कुंडली

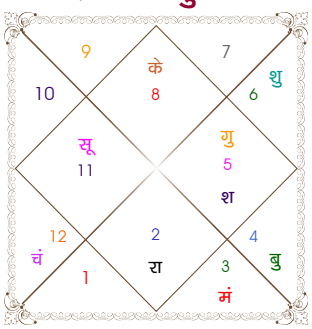

नक्षत्रफल

आप स्वाती नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुई हैं। अतः आपकी जन्मराशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी योनि महिष, वर्ग मृग, वर्ण शूद्र, गण देव तथा नाड़ी अन्त्य होगी। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भिक अक्षर "रो" से प्रारम्भ होगा।

आप स्वभाव से ही सहनशील प्रवृति की महिला होंगी। आप कष्टों को सहन करने की क्षमता से परिपूर्ण रहेंगी। व्यापारिक या क्रय विक्रय संबंधी कार्यों में आप अत्यन्त ही प्रवीण रहेंगी तथा अपनी आजीविका अर्जन में इसका प्रधान रूप से प्रयोग कर सकेंगी। आप के हृदय में दया एवं करूणा की भावना भी सर्वथा विद्यमान रहेंगी तथा यथाशक्ति दीन दुःखियों को आप समय समय पर सेवा तथा सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर रहेगी जिससे अन्य लोग भी आपसे प्रभावित रहेंगे तथा हृदय से आपका सम्मान भी करेंगे। धार्मिकता की भावना से भी आप युक्त रहेंगी तथा अपने जीवन काल में प्रयत्नपूर्वक इसका निष्ठा पूर्वक पालन करेंगी।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

देवता तथा ब्राहमणों के आप श्रद्धालु एवं भक्त रहेंगी तथा हमेशा उनके प्रिय कार्य अर्थात् धर्माचरण में रत रहेंगी। आप एक भाग्यशाली महिला होंगी तथा नाना प्रकार के सुखों का अपने जीवन में प्रसन्नतापूर्वक उपभोग करेंगी। साथ ही धनैश्वर्य एवं वैभव का भी आप के पास अभाव नही रहेगा। इनसे आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगी। आपकी बुद्धि में तीव्रता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि रहेगी।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

देखने में आप अत्याधिक सुन्दर रूप वाली होंगी तथा आपके सौन्दर्य से सभी लोग आपसे आकर्षित तथा प्रभावित रहेंगे। साथ ही आपका मुखमंडल तेज गुण से प्रकाशित रहेगा। समाज में अन्य जनों मित्रतापूर्ण संबंध स्थापित करके इनसे पूर्ण आदर तथा सहयोग प्राप्त करेंगी। साथ ही आप हमेशा प्रसन्न चित्त रहेंगी तथा दुःखादि को आप चेहरे से अधिक प्रदर्शित नहीं करेंगी। इसके अतिरिक्त आपको प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सरकार से धन प्राप्त होगा जिसे आप सुखपूर्वक उपभोग करेंगी।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप नाना प्रकार के शास्त्रों के ज्ञान प्राप्त करने में सफल रहेंगी तथा समाज में एक विदुषी के रूप में हमेशा आदरनीय रहेंगी। धर्मानुपालन में भी आपकी प्रकृति रहेंगी तथा पुरूषवर्ग की आप प्रिय रहेंगी। परन्तु स्वभाव में आपकी कृतज्ञता का बाहुल्य रहेगा। आपका आचरण शुद्ध रहेगा तथा अपने सम्भाषण में हमेशा प्रिय वाणी का ही उपयोग करेंगी साथ ही देवताओं के प्रति आपके मन में आस्था विद्यमान रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

रजत पाद में जन्म होने के कारण आपकी शारीरिक सुन्दरता दर्शनीय रहेगी तथा इसमें पूर्ण कोमलता तथा कान्ति भी विराजमान रहेगी। आपकी मुखाकृति अत्यन्त ही सुन्दर एवं आकर्षक रहेगी। आपका इन्द्रियों पर पूर्ण नियंत्रण रहेगा तथा अनावश्यक इच्छाओं का आप में सर्वथा अभाव रहेगा। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा प्रयत्न पूर्वक इसका पालन करती रहेंगी आपकी गति मधुर एवं आकर्षक रहेगी। जीवन में धन सम्पति तथा पुत्र से आप सुसम्पन्न तथा प्रसन्न रहेंगी। आपके पति पूर्ण रूप से आपका सम्मान करेंगे एवं अधिकांशतया मुख्य कार्यों को आपके कथनानुसार ही सम्पन्न करेंगे। आप सुशील एवं विन्रम स्वभाव की महिला होंगी तथा धन संचय के प्रति भी आप पूर्ण रूप से यत्नशील रहेंगी। जीवन में समस्त सुखसंसाधनों को अर्जित करने में आप सफल रहेंगी तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगी। इसके अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के धनैश्वर्य से भी आप सम्पन्न रहेंगी। साथ ही आप एक बुद्धिमती महिला होंगी तथा अधिकांश सद्गुणों से सम्पन्न रहेंगी।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आप शरीर तथा मुख से पतली रहेंगी। आपकी आखें बड़ी बड़ी तथा नाक ऊंची होगी। आपके पास वाहनों का कभी भी अभाव नही रहेगा तथा नाना प्रकार के वाहनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगी। समाज में अन्य जनों से आपके घनिष्ठ संबंध रहेंगे। वाहन तथा जायदाद आदि से आप बलवती रहेंगी तथा इनसे पूर्ण आथिक सहायता को प्राप्त करेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी जिससे समाज में आप अपना पूर्ण प्रभाव स्थापित करने में सफल रहेंगी। सभी सामाजिक जन भी आपको उचित सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे। आप एक धनैश्वर्य से सम्पन्न वैभवशाली महिला भी होंगी तथा समस्त सुखों का आनन्दपूर्वक

जीवन में उपभोग करेंगी। पति को आप पूर्ण रूप से अपने नियंत्रण में रखेंगी तथा कोई भी कार्य आज्ञा तथा निर्देश के बिना सम्पन्न नही होगा। कार्य करने में आप हमेशा सक्रिय रहेंगी तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति श्रद्धाभाव रखेगी तथा बन्धु वर्ग के उपकार करने में आप तत्पर रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

समाज में देवता, ब्राहमण तथा सज्जन पुरूषों की सेवा करने में सदैव तत्पर रहेंगी। साथ ही आप एक महान विदुषी के रूप में समाज में मान सम्मान तथा ख्याति भी अजित करेंगी। आप अपना जीवन शुद्धता से युक्त होकर व्यतीत करने की इच्छुक रहेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा घूमने फिरने की आप अत्यन्त शौकीन रहेंगी तथा अपने अधिकांश समय को भ्रमणादि में ही व्यतीत करेंगी। किसी भी प्रकार वस्तुओं के क्रयविक्रय कार्य में आप अत्यन्त दक्ष रहेंगी। आप शरीर से व्याकुलता का अनुभव करेंगी। आप तो अपनी ओर से बन्धु वर्ग की भलाई करेंगी परन्तु ये ही लोग बाद में आपकी उपेक्षा करेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली महिला होंगी तथा अपने अधिकांश कार्यकलापों को धैर्यपूर्वक ही सम्पन्न करेंगी। आप की न्याय प्रियता समाज में प्रसिद्ध रहेंगी अतः लोग आपको अपने विवादों का समाधान करने में आपको मध्यस्थ या पंच बनाएंगे आप अपनी इस कर्तव्य का ईमानदारी से निर्वाह करेंगी। इससे लोगों के मन में आपके प्रति अधिक सम्मान तथा आदर का भाव बढेगा। आपकी पुत्र संतति अल्प रहेगी तथा भाग्योदय देर से ही होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। आप सरकारी पदाधिकारियों को प्रसन्न करने की कला में दक्ष होंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा आदर की प्रप्ति करेंगी। आप अपने संबंधियो तथा बन्धुओं का कुछ न कुछ सहयोग हमेशा प्रदान करती रहेंगी। कभी कभी आप अनावश्यक रूप से अधिक बोलना पसन्द करेंगी इससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी। ज्योतिष अथवा ग्रह नक्षत्र संबंधी शास्त्रों की आप विदुषी रहेंगी इसके साथ ही बंधुवर्ग

तथा सेवक जनों के लिए आपके मन में स्नेह भाव विद्यमान रहेगा।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप कुअवसर पर अपने क्रोध को प्रदर्शित करेंगी इससे बाद में आपको दुःखानुभूति होगी। आपकी वाणी प्रिय तथा मधुरता से युक्त रहेंगी। आप दयावान तथा करूणाशील रहेंगी तथा दीनदुःखियों की सेवा एवं सहायता करने के लिए सर्वथा तत्पर रहेंगी। आपकी आखों में भी चंचलता का आधिक्य रहेगा। आप स्वयं को घर के अन्दर अत्यन्त ही बलवती समझेगी परन्तु बाहर जाकर अत्यन्त ही कमजोरी का अहसास करेंगी। आपके पास धनागम में सर्वथा अस्थिरता रहेंगी कभी तो अत्याधिक मात्रा में धन प्राप्त होगा तो कभी अल्प मात्रा में। इससे आप जीवन में आर्थिक विषमता की अनुभूति करेंगी। व्यापारिक कार्यों में आप हमेशा रूचिशील तथा सफलता प्राप्त करेंगी। बन्धु वर्ग तथा मित्रों के आप प्रिय रहेंगे एवं विदेश में भी निवास कर सकेगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऽति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में सर्वथा नाना प्रकार के शास्त्रो के ज्ञान से सुसम्पन्न रहेंगी तथा दानशीलता की प्रकृति भी आपके मन में विद्यमान रहेंगी साथ ही अन्य पुरूषों से भी आपके गहन संबंध रहेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देवगण में पैदा होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरता से परिपूर्ण रहेंगी इससे सभी लोग आप से प्रसन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि निर्मल तथा सादगी से युक्त रहेंगी। आप अपने विचारों को सादगी पूर्ण ढंग से प्रकट करने तथा अन्य लोगों के विचारों को भी सादगी से ग्रहन करने में प्रवीण रहेंगी। आपको अल्प मात्रा में शुद्ध भोजन करना अत्यन्त ही प्रियकर लगेगा। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानो द्वारा प्रतिष्ठित श्रेष्ठ गुणों से सुशोभित रहेंगी इसके अतिरिक्त आपको विविध प्रकार के धनैश्वर्य एवं वैभव से भी आप अपने जीवन में सर्वथा युक्त रहैंगी तथा आनन्दपूर्वक उसका जीवन में उपभोग करेंगी।

आप देखने में अत्यन्त ही सौन्दर्य शाली रहेंगी तथा आपके हृदय में दानशीलता की भावना सर्वथा विद्यमान रहेंगी। आप एक बुद्धिमती महिला भी होंगी तथा हमेशा सादगी पसन्द रहेंगी तथा अनावश्यक भौतिकता से दूर ही रहना पसन्द करेंगी। साथ ही आप एक विदुषी भी होंगी।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में उत्पन्न होने के कारण आप वाद विवाद तथा लड़ाई झगड़े इत्यादि में हमेशा विजय प्राप्त करेंगे। आप स्वयं भी साहसी होंगी तथा साहसी कार्यों को करने के लिए सर्वथा उत्सुक रहेंगी। आपके जीवन के अधिकांश कार्य साहस से ही सम्पन्न होगे। आपकी संततियां अधिक मात्रा में होंगी। आप में वात प्रवृति की हमेशा प्रधानता बनी रहेगी। अतः वात से उत्पन्न रोगों से यदा कदा आप पीड़ित भी रहेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि से ही आपके समस्त कार्य सम्पन्न होंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा पंचम भाव में स्थित है। अतः आप माता की परम प्रिय रहेंगी। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। धन धान्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगी तथा जीवन में आपको प्रत्येक क्षेत्र में अपना सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही कला, नीति, विद्या आदि में भी आपको नित्य प्रोत्साहित करती रहेंगी एवं इनकी वृद्धि में उनका मुख्य सहयोग रहेगा। वे स्वभाव से भी अत्यन्त सुशील होंगी तथा आपको नित्य अच्छी शिक्षाएं देती रहेंगी।

आप की भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञापालन के लिए नित्य तत्पर रहेंगी। जीवन में उनकी सेवा करना अपना कर्तव्य समझेंगी तथा अवसरानुकूल उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग एवं सहायता प्रदान करेंगी। आपके संबंध मधुर रहेंगे तथा किसी भी प्रकार से आपकी मतभेद नहीं रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है। अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं उनकी आयु भी दीर्घ होगी। आपके प्रति उनके हृदय में वात्सल्य भाव रहेगा तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप जीवन में पिता के द्वारा यश अर्जित करने में भी सफल रहेंगी। इसके अतिरिक्त पिता के द्वारा आपके स्वास्थ्य का विशेष ध्यान भी रखा जाएगा।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगी तथा उनकी सेवा एवं आज्ञा पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथापि यदा कदा अल्प मात्रा में सैद्धान्तिक मतभेद विद्यमान रहेंगे जिससे यदा कदा विवाद की स्थिति भी उत्पन्न हो सकती है। साथ ही आप जीवन में उन्हें अपना पूर्ण सहयोग तथा सहायता प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक व्याकुलता से वे पीड़ित रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव भी विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे तथा जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके हृदय में भी उनके प्रति स्नेह एवं सम्मान की भावना विद्यमान रहेगी। आपके संबंध प्रायः मधुर ही होंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेदों के कारण अल्प समय के लिए संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। आप एक दूसरे से प्रायः सहमत रहेंगे एवं विश्वास भी करेंगे। इसके साथ ही आप भी हमेशा सुख दुःख में यथाशक्ति उनकी सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगी एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा अशुभ फलदायक रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों में शतभिषा नक्षत्र, शुक्लयोग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभकार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ गुरूवार, चतुर्थ प्रहर एवं मीन राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित ही रखें तथा इन दिनो तथा समय में शारीरिक सुरक्षा के प्रति भी विशेष रूप से सावधान रहें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक उद्विग्नता, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्त करने में असफलता तथा अन्य शुभकार्यों में सफलता प्राप्त नही हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के व्रत रखने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत पुष्प, श्वेत चन्दन चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक किसी सुपात्र को दान करना चाहिए। ऐसा करने से आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलो में भी न्यूनता आएगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न

करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।